kakaji:arunjaity.qxd 9/26/2010 9:35 PM Page 7

प्राक्कथन

सन् उन्नीस सौ पचहत्तर! आपातकाल की काली छाया से भारतीय लोकतंत्र पूरी तरह आच्छादित हो गया था। अधिनायकवाद के विरूद्ध आवाज उठाने वाले सभी जन-नेताओं को जेलों में ठूंस दिया गया। इन्हीं में से एक थे नानाजी देशमुख।

25 वर्षों तक राजनीति में सक्रिय ही नहीं, अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले नानाजी को जेल में घनीभूत चिंतन के साथ ही आत्मालोचन का भी अवसर मिला। "राजनीति का बहिष्कार नहीं परिष्कार चाहिए" - इस उद्देश्य से लगभग तीन दशकों तक नवनिर्मित भारतीय जनसंघ से लेकर लोकनायक जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में गठित जनता पार्टी में दीर्घकाल तक कार्य करने के बाद भी अभीष्ट फल नहीं मिला। राजनीति दिनोंदिन प्रदूषित होती गई। विकास का मार्ग अवरूद्ध हो गया। आम जनता तबाही के कगार पर पहुंच गई। स्वातंत्र्य संग्राम में आत्माहुति देने वाले असंख्य देशभक्तों एवं जन नायकों ने क्या स्वाधीन भारत का यही सपना संजोया था?

"राष्ट्र-जीवन के आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षणिक आदि किसी भी क्षेत्र में क्या हम अपने राष्ट्रीय आदर्शों के अनुरूप कोई भी मौलिक रचना खड़ी कर पाए? आज भी देश की आधी आबादी दु:ख-दैन्य का जीवन बिताने के लिए मजबूर क्यों है?"

ऐसे अनेक प्रश्नों का उत्तर खोजने में नानाजी ने जेल-जीवन को सार्थक बना दिया। अन्तरात्मा से आवाज उठी "नवस्वतंत्र राष्ट्र-निर्माण के लिए व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामूहिक आचरण के क्षेत्र में लम्बे एवं बहुविध प्रयोगों की प्रक्रिया से गुजरना अनिवार्य होता है। प्रत्यक्ष आचरण की प्रयोगशाला की भट्टी में तपकर ही नवनिर्माण का सांचा तैयार हुआ करता है।"

राष्ट्र-जीवन की दुर्दशा देख अशांत मन को आशा की नई किरण ने झकझोरा। बस! अब शेष जीवन इसी कार्य में लगाना होगा। जेल से निकलने के बाद नानाजी ने पूरी ताकत के साथ स्वयं को नवनिर्माण के प्रयोग में समर्पित कर दिया।

सर्वप्रथम उन्होंने उत्तर प्रदेश के सर्वाधिक पिछड़े गोंडा जिले को अपनी कर्मस्थली बनाया। किसी भी समस्या का निदान खोजने के लिए उस समस्या की जड़ तक पहुंचना पड़ता है। गोंडा जिले के सर्वांगीण विकास का लक्ष्य लेकर नानाजी ने प्रारंभ में एक वर्ष तक सायकिल, मोटरसायकिल या पैदल ही दौरा कर ग्रामीणों के साथ विचार-विमर्श किया। विकास की कुंजी उन्हें मिली इन्हीं अनपढ़ समझे जाने वाले निर्धन किसानों से। "खेती के लिए पानी मिल जाए तो हम अपने परिश्रम से इस गरीबी से उबर जायेंगे।"

बस फिर क्या था? नानाजी जुट गए - इस समस्या के समाधान में। सर्वांगीण विकास के लिए चार सूत्र निधारित किए गए -

1. शिक्षा, 2. स्वास्थ्य, 3. स्वावलंबन, 4. सदाचार

इन चार सुदृढ़ स्तंभों पर आधारित सर्वोत्कर्ष के लिए "जनप्रेरणा और जनसहभाग" की अनिवार्यता निरूपित की गई।

संकल्प शक्ति के धनी नानाजी ने यह असंभव दिखने वाला कार्य संभव कर दिखाया। इसी अवधि में नानाजी को यह समझते देर न लगी कि बढ़ती आबादी और घटती कृषि भूमि में कृषि विकास के कार्यक्रम ही पर्याप्त नहीं। नई पीढ़ी के लिए काम के अवसर भी ढूंढ़ने होंगे। उनके उर्वरमस्तिष्क ने इसी विचार को एक नारे का रूप दिया - "हर हाथ को काम - हर खेत को पानी।"

लेकिन हर एक प्रयोग में सफलता के साथ-साथ असफलता का सामना भी करना पड़ता है। नानाजी को भी अनेक अवसरों पर असफलता मिली। विशेषकर चित्रकूट में शैक्षणिक क्षेत्र में पूर्व प्राथमिक से स्नातकोत्तर शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने एक अभिनव प्रयोग प्रारंभ किया। वहां ग्रामोदय विश्वविद्यालय की स्थापना की।

मात्र दो वर्ष की अवधि में सभी वांछित कल्पनाओं को व्यवहारिक रूप प्रदान करने में उन्होंने सफलता पाई। पर विद्वेषमूलक सत्तालिप्सा की राजनीति ने इस प्रयोग पर विराम लगा दिया।

दो वर्षों के अपने अथक प्रयासों पर पानी फिर जाने के बाद भी नानाजी निराश नहीं हुए। असफलता